12-05-2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A part. I paper. I
Topic - Justice. I Basic principles of political theory.
Lecture - 42

न्याय (Justice) - 1

न्याय की उत्पत्ति Latin भाषा के शब्द (Jus) से हुई है। 'जस' शब्द का अर्थ 'बन्धन' या 'बांधना' उत्पत्ति की दृष्टि से न्याय का अर्थ एक ऐसी भावना से लिया जाता है जो समाज मे रहने वाले व्यक्तियो को एक व्यवस्था मे बांधती है।

D.D. Raphael के अनुसार, " न्याय उस व्यवस्था का नाम है जिसके द्वारा व्यक्तिगत अधिकार की भी रक्षा होती है और समाज की मर्यादा भी बनी रहती है।" (Justice protects the rights of the individual as well as the order of the society)

कांट (Kant) के अनुसार " न्याय हर व्यक्ति की बाहरी स्वतन्त्रता है जो अन्य व्यक्तियो की स्वतंत्रता द्वारा सीमित है।" (Justice is the external liberty of each person limited by the liberty of all others)

न्याय की विशेषताएं
(Characteristics of Justice)

नैतिक धारणा (Ethical concept) — न्याय के बारे मे अलग-अलग विद्वानो ने अलग-अलग

विचार भले ही रखे हो, परंतु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि न्याय शुन्य रूप से क्या नैतिक धारणा है। यह धारणा वास्तव में तर्क व औचित्य पर आधारित है। कोई भी तथ्य उचित है या अनुचित इसबात पर निर्भर करता है कि समाज के शुन्य उसके पक्ष में है या विपक्ष में। व्यक्ति के जो कार्य समाज में स्थापित मुल्यों के अनुसार पूरे किए जाते है वह न्याय होगा और यदि वही कार्य समाज में स्थापित शुल्यों के अनुसार नहीं है तो वह अन्याय कहलाएगा। नैतिकता के बिना न्याय की कल्पना संभव नहीं हो सकती।

2. परिवर्तनशील धारणा (Dynamic Concept)

जिस प्रकार समाज परिवर्तनशील है, उसी प्रकार न्याय का संबंध समाज से होने के कारण न्याय की धारणा भी परिवर्तनशील है समय बीतने के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक व अन्य परिस्थितियाँ भी बदलती है। इसके साथ जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ता है तो लोगो के विचारों उनकी सोच व दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आता है और यही परिवर्तन न्याय की धारणा को प्रभावित करके उसको परिवर्तनशील बनाता है।

3. सत्य (Truth) — प्राचीन युनानी विचारक प्लेटो ने न्याय की अवधारणा का विस्तृत वर्णन किया है। जिसमें एक पात्र के माध्यम से यह कहा जाता है कि (सत्य बोलना और अपना कर्ज चुकाना न्याय है। सत्य का अर्थ घटनाओं का सही वर्णन प्रस्तुत करना है।

4. बहुपक्षीय धारणा (multi-dimensional concept)

न्याय की धारणा का संबंध समाज से है। समाज का क्षेत्र विस्तृत है तथा सामाजिक जीवन के भिन्न-भिन्न पक्ष होते हैं। सामाजिक प्राणी होने के नाते एक व्यक्ति अलग-अलग स्तर पर अलग-अलग प्रकार की क्रियाएँ पूरी करता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्ष होने के कारण न्याय की धारणा भी बहुपक्षीय बन जाती है।

5. कर्तव्यों का पालन (Performance of Duties)

प्लेटो ने न्याय की धारणा की विस्तृत व्याख्या की है जिसमें कहा गया है कि "जब एक व्यक्ति अपने कर्तव्यों को पूरा करता है तो वह न्याय कहलाता है।" आधुनिक समय में न्याय की यह विशेषता प्रचलित है।

6. सामंजस्य या समरसता (Harmony)-

सामंजस्य को न्याय का एक मुख्य लक्षण माना गया है। प्लेटो ने अपने न्याय के सिद्धांत में इसका वर्णन किया है जिसमें कहा गया है कि शासक वर्ग स्वयं को निजी स्वार्थ से अलग रखे। प्लेटो ने दार्शनिक शासक की कल्पना की है। दार्शनिक शासक का अपना कोई परिवार नहीं होगा। उन्हें तो समूचे समाज को ही अपना परिवार मानना होगा, तभी शासक वर्ग समाज में न्याय कर सकेगा।

न्याय की धारणा का विकास
(Evolution of the concept of justice)

न्याय के सम्बन्ध में अलग - अलग विद्वानों ने अलग - अलग विचार रखे हैं, इनमें से कुछ महत्वपूर्ण विचारों अथवा धारणाओं का वर्णन इस प्रकार है —

1. न्याय के संबंध में प्लेटो के विचार
(Platonic views of justice)

प्रसिद्ध यूनानी विचारक प्लेटो ने अपने ग्रंथ 'रिपब्लिक' में न्याय की अवधारणा का विस्तार से वर्णन किया है। प्लेटो का मानना है कि समाज में दो तरह की खराबियाँ हैं। प्रथम यह कि जो लोग दूसरों को रास्ता दिखलाने का दावा करते हैं, वे स्वयं बड़े अज्ञानी हैं। दूसरे, समाज में राजनीतिक स्वार्थ और कलह मौजूद है। इन दोनों कमियों से छुटकारा पाने के लिए न्याय की स्थापना जरूरी है। प्लेटो का विश्वास था कि मनुष्य में तीन तत्व होते हैं —

तर्क, आत्मा, तृष्णा तथा मनुष्य के इन तीनों तत्वों के साथ मिलती-जुलती समाज की तीन श्रेणियाँ हैं। प्रत्येक समाज में तीन तरह के मनुष्य पाए जाते हैं। प्रथम, जिन मनुष्यों में तर्क के तत्व अधिक मात्रा में पाए जाते हैं वे व्यक्ति शासक वर्ग के होते हैं, द्वितीय वे जिनमें साहस का तत्व ज्यादा पाया जाता है, वे सैनिक वर्ग में शामिल होते हैं। तृतीय, वे जिनमें भूख का तत्व पाया जाता है, उन्हें उत्पादक वर्ग की श्रेणी में डाला गया है।